साप्ताहिक आर्य सन्देश

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

देव त्वष्टर्वर्धय सर्वसातये। अथर्ववेद 613/3

सब सुखों के दाता परमेश्वर ! जगत निर्माता प्रभो! हमें इतना समृद्ध कर कि सब कुछ पा सकें।

O God ! The bestower of happiness and prosperity, Creator of the world ! make us so capable that we way attain all that we aspire for.

वर्ष 42, अंक 17 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 11 मार्च, 2019 से रविवार 17 मार्च, 2019
विक्रमी सम्वत् 2075 सृष्टि सम्वत् 1960853119
दयानन्दाब्द : 195 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों एवं आर्य संस्थाओं के सहयोग से मिलन पर्व के रूप में

17वां आर्य परिवार होली मंगल मिलन समारोह

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर समारोह को सफल बनाएं

होली भारतीय संस्कृति की पहचान का एक सुन्दर पर्व है, भेदभाव मिटाकर पारस्परिक प्रेम व सदभाव प्रकट करने का एक अवसर है। अपने दुर्गुणों तथा कुसंस्कारों की आहुति देने का एक वासन्तीय नवसस्येष्टि यज्ञ है तथा परस्पर छुपे वैमन्य को दूर करना, अपने आनन्द को, सहजता को, और मधुर सम्बन्धों को सरल सहजता के सुख को उभारने का उत्सव है।

यह रंगोत्सव हमारे पूर्वजों की दूरदर्शिता है जो अनेक विषमताओं के बीच भी समाज में एकत्व का संचार करता है। होली के रंग-बिरंगे रंगों की बौछार जहाँ मन में एक सुखद अनुभूति प्रकट कराती है वहीं यदि सावधानी, संयम तथा विवेक न रख जाये तो ये ही रंग दुखद भी हो जाते हैं। अत: इस पर्व पर कुछ सावधानियाँ रखना भी अत्यंत आवश्यक है।

प्राचीन समय में लोग पलाश के फूलों से बने रंग अथवा कुमकुम-हल्दी चन्दन से होली खेलते थे। किन्तु वर्त्तमान समय में रासायनिक तत्त्वों से बने रंगों का उपयोग किया जाता है। ये रंग त्वचा पर चक्कतों के रूप में जम जाते हैं। अत: ऐसे रंगों से बचना चाहिये। यदि किसी ने आप पर ऐसा रंग लगा दिया हो तो तुरन्त ही बेसन, आटा, दूध, हल्दी व तेल के मिश्रण का उबटन रंगे हुए अंगों पर लगाकर रंग को धो डालना चाहिये। यदि उबटन करने से पूर्व उस स्थान को निम्बू से रगड़कर साफ कर लिया जाए तो रंग छुटने में और अधिक सुगमता आ जाती है।

- शेष पृष्ठ 7 पर

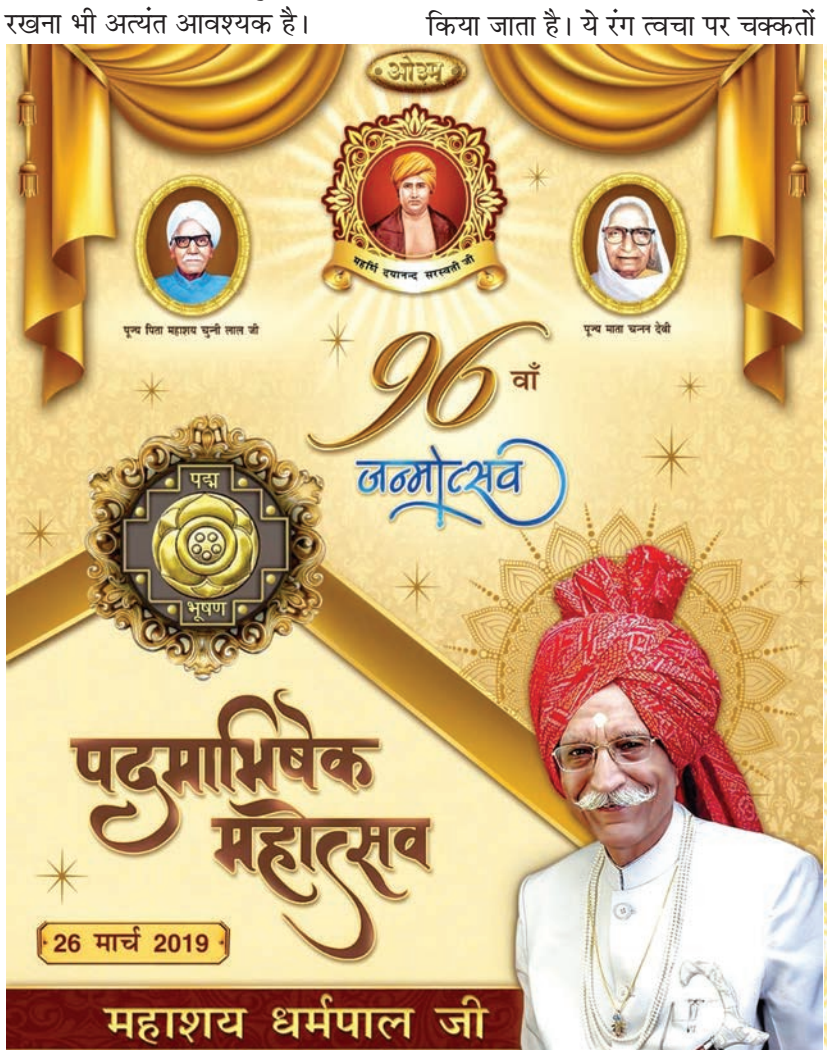

वेद-स्वाध्याय

सत्पात्र में दान की महती महिमा

शतहस्त समाहर सहस्त्रहस्त सं किर।
कृतस्य कार्यस्य चेह स्फातिं समावह।। - अथर्व. 3/24/5
ऋषिः **भृगुः।।** देवता - **वनस्पतिः।।** छन्दः **अनुष्टुप्।।**

शब्दार्थ - शतहस्त = हे सौ हाथो वाले मनुष्य! **समाहर** = तू इकटठा कर और **सहस्त्रहस्त** = हे हजार हाथों वाले! **संकिर** = तू दान कर, बिखेर। [सौ-सौ सत्कार्यों से कमा और हजार-हजार हाथों से बाँट] इस तरह **कृतस्य** = अपने किये हुए की **कार्यस्य च** = और किये जानेवाले की **स्फातिम्** = बढ़ती को, फसल को **इह** = तू इस संसार में **समावह** = ठीक प्रकार से प्राप्त कर।

विनय-हे दो हाथोंवाले मनुष्य! तू सौ हाथोंवाला होकर धन संग्रह कर, सौ गुनी शक्ति से धन-धान्यादि ऐश्वर्यों को इकटठा कर, परन्तु इस उपार्जन किये हुए अपने धन को हजार हाथोंवाला होकर सत्पात्र में दान कर दे। धन-संग्रह करने के लिए यदि तू सौ हाथोंवाला हुआ है तो धन को दूर-दूर बाँट देने के लिए, दान कर देने के लिए, तू हजार हाथोंवाला हो जा। इससे निःसन्देह तेरी बढ़ती होगी, तेरी उन्नति होगी, तेरा बड़ा भारी कल्याण होगा। तू अपनी 'कृत' और 'कार्य' कमाई को देख। तूने जो कमाया है वह तो कमाया ही है, वह तेरी 'कृत'-कमाई है, परन्तु जो तूने हजार हाथों से दूर-दूर अपने दान को फैलाया है वह भी तेरी कमाई है। वही कमाई वस्तुतः 'कार्य' है जो भविष्य में अपना फल दिखलाएगी। वास्तव में, जैसे समाहृत किये धान्य को सत्क्षेत्र में (जोते हुए खेत में) संकिरण कर देने (बिखेर देने) से उसका एक-एक दाना हजारों दानों को देनेवाले पौधे के रूप में पुष्पित और फलित हो जाता है, उसी प्रकार किसी यज्ञिय कार्य में दिया हुआ धन, सत्पात्र में दिया हुआ धन, सत्पात्र में दिया हुआ दान, अनन्त गुणा होकर फलित हुआ करता है। इस प्रकार हे मनुष्य! तू देख कि तू कितनी बड़ी भारी फसल का स्वामी हो जाता है, तू कितनी बड़ी भारी 'स्फाति' को प्राप्त हो जाता है! यह बढ़ती 'शतहस्त से लेने और सहस्त्रहस्त से देने' के सिद्धान्त का फल है। हे मनुष्य! तू इस सिद्धान्त का पालन करता हुआ अपनी इस बढ़ती को सदा ठीक प्रकार से प्राप्त करता रह।

-: साभार :-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

दलित-मुस्लिम गठजोड़ : धर्मान्तरण की एक नई परियोजना

..... जो दलित आज यह समझ रहे है कि मुस्लिमों में भेदभाव नही है तो उन्हें समझना होगा कि भले इस्लाम पंथ में सारे मुसलमान समान हों, पर व्यवहार और रहन-सहन में यह अन्तर साफ दीखता है। यहां तक कि अलग-अलग जातियों की मस्जिदें भी अलग-अलग हैं। देवबंदवी से लेकर बरेलवियों के झगड़े साफ नजर आते हैं। इसके अलावा शिया-सुन्नी-वोहरा और अहमदिया मुसलमान अलग हैं। इनमें से हर एक दूसरे से दूरी बरतता है और हिंसक हो उठता है। कुछ अन्य धर्म के लोगों को नीचा समझते और शरीयत से इंकार करने पर दूसरे धर्म के लोगों के साथ रहने में असहज हो उठते हैं। .....

दलित मुस्लिम एकता गठजोड़ राजनीतिक नहीं बल्कि एक धार्मिक परियोजना का हिस्सा है क्योंकि इसमें कोसने को हिंदुत्व है, आलोचना करने को मनुस्मृति हैं। अपशब्द बोलने को हिन्दुओं के महापुरुष है और नफरत करने को हिन्दुओं के त्यौहार है। इस परियोजना की तस्वीर आप दूर से देखेंगे तो लगेगा यह राजनैतिक है किन्तु जब तस्वीर के एक-एक पहलू पर गौर करेंगे तो इसकी बारीकियों पर नजर डालेंगे तो सच सामने आकर खड़ा हो जायेगा।

अगले कुछ महीनों में चुनाव होने जा रहे हैं। इस कारण देश में राजनैतिक और सामाजिक उथलपुथल मचनी तय है। इसमें किसानों का विरोध प्रदर्शन है तो कहीं जातीय समूहों का आंदोलन है। लेकिन इस सबके बीच एक बड़ा ही राजनैतिक दिलचस्प खेल भी होने जा रहा है जिसे लोग दलित और मुस्लिम गठजोड़ बता रहे है। बहाना बनाया जा रहा है कि दलितों और मुसलमानों के हालात एक जैसे हैं और मौजूदा सरकार इन दोनों ही समुदायों की लगातार उपेक्षा कर रही है। यह असउददीन ओवैसी टाइप कुछ चतुर नेताओं का खेल दिख रहा था कि वह इस बहाने सत्ता में अपनी दखल बना रहे है किन्तु अब तस्वीर बदल रही है दलित और मुस्लिम गठजोड़ का फॉर्मूला केवल चुनाव तक ही सीमित नहीं है। जाति और धर्म का ये पूरा गणित है बल्कि इसमें धर्मान्तरण का खेल भी छिपा है।

इसे शुरू से समझिये हैदराबाद की यूनिवर्सिटी में रोहित वेमुला आत्महत्या करता है। सवाल बनाया जाता कि देश में दलित-मुस्लिम सुरक्षित नहीं है, जबकि इसमें दूर-दूर तक किसी मुस्लिम का लेना देना नहीं होता। फिर गुजरात के ऊना में दलितों के साथ एक घटना घटती है फिर यही शोर दोहराया जाता इसमें भी किसी मुस्लिम का कोई लेना-देना नहीं होता है। इसके बाद भीमा कोरेगांव में शौर्य दिवस मनाया जाता है और मंच पर मुस्लिम संगठन पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया, मूल निवासी मुस्लिम मंच, छत्रपति शिवाजी मुस्लिम ब्रिगेड, दलित इलम आदि संगठन चढ़कर खड़े हो जाते हैं। फिर यही दोहराया जाता है कि कि देश में दलित-मुस्लिम सुरक्षित नहीं है। दलितों पर अत्याचार की कहानी सुनाई जाती है और उन्हें यह पहाड़ा पढ़ाया जाता है कि अत्याचार करने वाले सिर्फ हिन्दू होते हैं।

इस बात को बार-बार दोहराकर दलितों को यही घुट्टी पिलाने की कोशिश जारी है कि वह खुद को अन्य हिन्दुओं से अलग समझें। यदि एक बार दलितों ने अलग समझ लिया तो धर्मान्तरण का आधा कार्य आसान हो जायेगा। इस कारण जनवाद के नाम से नये मंच तैयार किये जा रहे हैं जिनमें दलितों को भारतीय महापुरुषों के प्रति घृणा का पाठ पढ़ाया जा रहा है उन्हें बताया जा रहा है कि दलित एवं पिछड़े वर्ग को तो होली, दशहरा, दिवाली एवं भारतीय महापुरुषों के जन्मोत्सव तक नहीं मनाने चाहिए। असल सच्चाई यह है कि देश में सरकारी आंकड़े बताते हैं कि दलित करीब 20 फीसदी हैं और मुसलमान 15 फीसदी। दोनों मिलकर 35 फीसदी के लगभग हैं तो मुस्लिम धर्म गुरुओं से लेकर नेताओं तक इस समीकरण को समझकर यही सोच रहे कि इन आंकड़ों की फिलहाल क्यों न वर्तमान में राजनैतिक और भविष्य में धार्मिक खुराक बनाई जाये।

दलितों को भड़काने के लिए डॉ. अम्बेडकर जी का नाम लेते हैं जबकि डॉ. अम्बेडकर ने इस्लाम स्वीकार करने का प्रलोभन देने वाले हैदराबाद के निजाम का प्रस्ताव न केवल खारिज कर दिया अपितु 1947 में उन्होंने पाकिस्तान में रहने वाले सभी दलित हिन्दुओं को भारत आने का सन्देश दिया था। डॉ. अम्बेडकर 1200 वर्षों से मुस्लिम हमलावरों द्वारा किये गए अत्याचारों से परिचित थे। वे जानते थे कि इस्लाम स्वीकार करना कहीं से भी जातिवाद की समस्या का समाधान नहीं है, क्योंकि इस्लामिक फिरके तो आपस में ही एक दूसरे की गर्दन काटते फिरते हैं। वह जानते थे कि इस्लाम स्वीकार करने में दलितों का हित नहीं है।

लेकिन आज दलित नेताओं के द्वारा डॉ. अम्बेडकर की तस्वीर मंच पर सजाकर उसके इस्लाम के प्रति विचारों को किनारे कर दफनाने का कार्य किया जा रहा है। वामपंथी सोच वाला प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया इस षडयंत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता सा दिख रहा हैं। समाजवाद का ढ़ोल पीटने वाले भारतीय राजनैतिक दल इस्लामवाद की चपेट में आकर दलित समुदाय के सामाजिक विकास को प्रोत्साहन देने के बजाय उल्टा उनको इस्लामवाद की भट्टी में झोंकने में तत्पर से दिखाई दे रहे हैं।

जो दलित आज यह समझ रहे हैं कि मुस्लिमों में भेदभाव नहीं है तो उन्हें समझना होगा कि भले इस्लाम पंथ में सारे मुसलमान समान हों, पर व्यवहार और रहन-सहन में यह अन्तर साफ दीखता है। यहां तक कि अलग-अलग जातियों की मस्जिदें भी अलग-अलग हैं। देवबंदवी से लेकर बरेलवियों के झगड़े साफ नजर आते हैं। इसके अलावा शिया-सुन्नी-वोहरा और अहमदिया मुसलमान अलग हैं। इनमें से हर एक दूसरे से दूरी बरतता है और हिंसक हो उठता है। कुछ अन्य धर्म के लोगों को नीचा समझते और शरीयत से इंकार करने पर दूसरे धर्म के लोगों के साथ रहने में असहज हो उठते हैं।

गौरतलब बात यह है कि दलितों को भड़काने वालों के दलित नेताओं के लिए डॉ. अम्बेडकर के इस्लाम के विषय में विचार भी कोई मायने नहीं रखते। क्या ये जनवादी और अम्बेडकर के नाम पर रोटी तोड़ने वाले तथाकथित दलित हितैषी दल इस नफरत से दलितों को अपने ही धर्म और समाज से दूर करने का प्रयास नहीं कर रहे हैं? ऐसा करने वाले दलित हितैषी नेता तो आज एक बारगी चुनाव जीत जायेंगे किन्तु इसकी एवज में वर्षों शोषित रहा समाज जो आज समाज की मुख्यधारा में आकर अपना कार्य कर रहा है उस दलित समाज पीछे धकेल कर पुनः अपना गुलाम बना लेंगे। - ***सम्पादक***

वैदिक शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में

सिक्के वाले	बिना सिक्के
मात्र 500/-रु. सैंकड़ा	मात्र 300/-रु. सैंकड़ा

प्राप्ति स्थान : -दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली
दूरभाष : 011-23360150, 09540040339

ऐतिहासिक एवं खोजपूर्ण लेख

श्री सत्यानन्द स्टोक्स : गाथा एक अमेरिकी आर्य संन्यासी की

यह कहानी किसी कागज के टुकड़ों की नहीं बल्कि यह कहानी लकड़ी और पत्थर पर लिखी मानों एक पूरी किताब हो। ये कहानी जिन्दा दस्तावेज है। आर्य समाज के उस महान कार्य का जिसनें हिमाचल प्रदेश को ईसायत के जाल में जाने से बचाया था। यह जिन्दा मिसाल हिमाचल प्रदेश के कोटगढ़ में थानाधर से छह किलोमीटर की दूरी पर 1843 में अंग्रेजों द्वारा बनाए गये एक चर्च से शुरू होती है और अंत में एक आर्य समाज मन्दिर रूकती है।

यह एक ऐसे शख्स की कहानी है, जिसने विश्व को भारत के साथ वेद और वैदिक धर्म का परिचय कराया। परन्तु इसके लिए हमें 119 वर्ष पहले जाना होगा जब अमेरिका के एक अमीर पिता की सन्तान 21 साल के सैमुअल इवान स्टोक्स सन 1900 में ईसाई मिशनरी बनकर हिन्दुओं के धर्मान्तरण के लिए भारत आते हैं। जो आते तो हैं भारतीयों को ईसा मसीह का सन्देश देने किन्तु आर्य समाज के सम्पर्क में आकर वेद का सन्देश देने लग जाते हैं।

असल में अमेरिका के फिलाडेल्फिया शहर से सन 1900 में एक शख्स सैमुअल इवान स्टोक्स वेटिकन के आदेश पर भारत आये थे। उस समय मिस्टर एंड मिसेज कार्लटन नाम एक डॉक्टर दम्पति थे जो भारत में कुष्ठ रोग मिशन की रोकथाम के लिए काम कर रहे थे। इवान स्टोक्स भी इन्ही के साथ मिलकर सेवा-भावना की आड़ में अपने धर्मान्तरण के कार्य को आगे बढ़ाने लगे। शुरूआती दिनों में मुम्बई समेत देश के कई मैदानी इलाकों में रहे लेकिन गर्मी के कारण बाद में हिमाचल के पहाड़ों में चले गये।

धीरे-धीरे समय गुजरा और 12 सितम्बर, 1912 में इवान स्टोक्स ने एक भारतीय ईसाई महिला एग्नेस से ईसाई रीति-रिवाज से शादी कर ली। हालांकि उन्हें अपने परिवार से बहुत विरोध का सामना करना पड़ा क्योंकि वे अपने परिवार के समृद्ध व्यवसाय के उत्तराधिकारी थे। जब इवान स्टोक्स भारत में जीवन बिताने को दृढ हो गये तो उनका परिवार उनकी इस जिद के सामने झुक गया। उनकी माँ ने उन्हें शिमला के बारोबाग में 30,000 रुपये की कीमत का करीब 200 एकड़ में फैला एक चाय का बागान उपहार के रूप में खरीदकर दे दिया। जिसे बाद में इवान स्टोक्स ने सेब के बगीचे में बदल दिया। बाहर से अच्छी प्रजाति के सेब के पौधे मंगाए और हिमाचल में एक सेब की क्रांति को शुरू कर दिया।

इसके बाद अब असल कहानी यहाँ से शुरू होती है उन दिनों देश में प्लेग के बीमारी फैली थी और प्लेग फैलने पर गांव के स्वस्थ लोग अपने रोगियों को ईश्वर के भरोसे छोड़कर सुरक्षित स्थानों पर चले जाते थे। किन्तु आर्य समाज के लोग मानव सेवा के कार्यों में दिन-रात लगे हुए थे। एक ऐसे ही वैदिक धर्म के अनुयायी, ऋषिभक्त, महात्मा पंडित रुलियाराम जी थे। जिनके अन्दर लोकसेवा की एक ऐसी प्यास थी जो कभी बुझती ही न थी। पण्डित जी में समाज के लिए त्याग था, उत्साह था और निष्काम सेवाभाव था। जब उनका यह भाव सैमुअल इवान स्टोक्स ने देखा तो उनके मन में सत्य के किवाड़ खुल गये। तब उनके मन में आया यही सच्ची मानव सेवा हैं। यही सत्य और धर्म है। वह जो धर्मान्तरण का कार्य मिशनरी आदेश पर कार्य कर रहे हैं उसमें स्वार्थ है और मनुष्यता के साथ धोखाधड़ी है।

..... आर्य समाज के लोग मानव सेवा के कार्यों में दिन-रात लगे हुए थे। एक ऐसे ही वैदिक धर्म के अनुयायी, ऋषिभक्त, महात्मा पंडित रुलियाराम जी थे। जिनके अन्दर लोकसेवा की एक ऐसी प्यास थी जो कभी बुझती ही न थी। पण्डित जी में समाज के लिए त्याग था, उत्साह था और निष्काम सेवाभाव था। जब उनका यह भाव सैमुअल इवान स्टोक्स ने देखा तो उनके मन में सत्य के किवाड़ खुल गये। तब उनके मन में आया यही सच्ची मानव सेवा हैं। यही सत्य और धर्म है। वह जो धर्मान्तरण का कार्य मिशनरी आदेश पर कार्य कर रहे हैं उसमें स्वार्थ है और मनुष्यता के साथ धोखाधड़ी है।.....

इसके कुछ समय बाद इवान स्टोक्स लाला लाजपत राय जी से मिले। उनके अन्दर देश की स्वतंत्रता की तड़फ देखी, समाज के प्रति उनकी सेवा भावना के कार्यों से प्रेरित हुए। उन्होंने आर्य समाज वैदिक धर्म और ऋषि दयानन्द के विचारों को समझा और सत्यार्थ प्रकाश का अध्ययन किया। तत्पश्चात सैमुअल स्टोक्स भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग लेने वाले एक मात्र अमेरिकी बन गये। ब्रिटिश शासन के विरोध में आर्य समाज की विचारधारा से प्रभावित एक ऐसे क्रन्तिकारी बन गये जिसे ब्रिटिश सरकार के खिलाफ राजद्रोह और घृणा को बढ़ावा देने के लिए 6 माह तक जेल में डाल दिया गया।

वर्ष 1932 आते-आते एक अद्भुत घटना घटी और इवान स्टोक्स का हृदय परिवर्तन हो गया, स्वयं को वेटिकन और ईसायत के जाल से मुक्त कर, वैदिक धर्म अपनाकर अपना नाम सैमुअल इवान से सत्यानंद स्टोक्स कर लिया और सच्चे ईश्वर की खोज में निकल पड़े। अंग्रेजी में भगवत गीता का अध्ययन किया और फिर इसे समझने के प्रयास में संस्कृत सीखी और वेद, उपनिषद का अध्ययन किया। बारोबाग में ही घर के एक हिस्से में आर्य समाज मंदिर की स्थापना की। उसमें लकड़ी के खंभों पर उपनिषदों और भगवद्गीता के शिलालेखों को उकेरा। यानि अब सत्यानंद स्टोक्स अब एक वैदिक आर्य संन्यासी बन गये। पत्नी एग्नेस ने अपना नाम बदलकर प्रियदेवी तथा बच्चों के नाम प्रीतम स्टोक्स, लाल चंद स्टोक्स, प्रेम स्टोक्स, सत्यवती स्टोक्स, तारा स्टोक्स और सावित्री स्टोक्स कर दिए।

वर्ष 1937 में थानाधर में आर्य समाज मन्दिर का निर्माण इतिहास की इबारत लिख चुका था। उनकी आर्थिक सहायता के लिए उस समय भारतीय उद्योग जगत के एक दिग्गज जुगल किशोर बिड़ला ने उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए 25,000 रुपये का योगदान दिया। आज उनके द्वारा बनाए गये इस मंदिर को परमज्योति मंदिर या अनन्त प्रकाश का मंदिर कहा जाता है। 14 मई, 1946 को सत्यानंद स्टोक्स के प्राण तो अपनी महायात्रा पर निकल गये पर आज तक मन्दिर की दीवारों पर लिखे वेदों और उपनिषदों के मन्त्र आर्य समाज की इस धर्म रक्षा का गुणगान गाते सुने जा सकते है। - *राजीव चौधरी*

क्रान्तिकारियों की कथा

गिरफ्तारी दो खतरनाक क्रान्तिकारियों की

गतांक से आगे -

उन दिनों लखनऊ का खद्दर भण्डार अमीनुद्दौला पार्क के सामने एक दुकान में था। (आज हज़रतगंज थाने के निकट एक विशाल भवन में है, जिसमें पहले ब्रिटिश सैनिकों का 'सोल्जर्स क्लब' था) और उसके मैनेजर (स्व.) पुलिन बिहारी बनर्जी थे। बनर्जी और मिश्र में खूब पटती थी। बंगाल के कई क्रान्तिकारियों से बनर्जी का ख़ासा सम्पर्क था। संगठन-कार्य के लिए आए क्रान्तिकारियों के रहने-सहने, खाने-पीने की व्यवस्था बनर्जी ही करते थे।

'डिस्ट्रिक्ट इंटेलिजेन्स स्टाफ़' (वर्तमान लोकल इंटेलिजेन्स यूनिट) के कांस्टेबिल अब्दुल्ला की भी हमदर्दी क्रान्तिकारियों के प्रति थी। शहर के चप्पे-चप्पे की 'ओवर्ट' (बाहरी) राजनीतिक जानकारी जितनी डी. आई. एस. को होती, अन्य किसी प्रान्तीय अथवा केन्द्रीय गुप्तचर संस्था को नहीं। हां, 'कववर्ट' (अन्दरुनी) जानकारी में अवश्य उन्हें माहिर माना जाता था। अत: ख़ाना तलाशी या गिरफ़्तारी बग़ैर डी.आई.एस. की सहायता लिए न तो पहले होती थी, न अब।

तलाशी लेने के एक रोज़ पेश्तर डी. आई. एस. के सब-इंस्पेक्टर इन-चार्ज को ज़बानी इत्तिला दे दी जाती थी कि अमुक स्थान पर दबिश देनी है। इसलिए उसके स्टाफ के एक-दो व्यक्तियों का मौजूद रहना लाज़िमी था। सब इंस्पेक्टर उस इलाक़े के हेड-कांस्टेबिल को बताता और वह अण्डर-अफ़सर अपने अधीन कांस्टेबिल को सूचित करता।

- क्रमश:

- धर्मेन्द्र गौड़ : साभार :

क्रान्तिकारी आन्दोलन के अधखुले पन्ने

क्रान्तिकारी आन्दोलन के अधखुले पन्ने : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्त करने के लिए मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

आर्यजगत् का सुप्रसिद्ध चलचित्र
सत्य की राह Vedic Path to Absolute Truth
मात्र 30/- रु. हिन्दी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं में उपलब्ध
प्राप्ति स्थान : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, मो. नं. 9540040339

आर्य पर्व होली पर विशेष

होली का पर्व और वैदिक धर्म

फाल्गुन मास की पूर्णिमा को मनाये जाने वाले पर्व होली का प्राचीन नाम ''वासन्ती नवसस्येष्टि'' है। यह उत्सव-पर्व वसन्त ऋतु के आगमन पर मनाया जाता है। चैत्र कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा को एक दूसरे के चेहरे पर रंग लगाकर या जल में घुले हुए रंग को एक दूसरे पर डाल कर तथा परस्पर मिष्ठान्न का आदान-प्रदान कर इस पर्व को मनाने की परम्परा चली आ रही है। यह भी कहा जाता है कि इस पर्व के दिन पुराने मतभेदों, वैमनस्य व शत्रुता आदि को भुला कर नये मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों का आरम्भ किया जाता है। सर्वत्र रंग-बिरंगे फूलों के खिले होने से वातावरण भी रंग- तरंगमय या रंगीन सा होता है।

वसन्त ऋतु भारत में होने वाली 6 ऋतुओं का राजा है। वसन्त ऋतु में शीत ऋतु का अवसान हो जाता है और वायुमण्डल शीतोष्ण जलवायु वाला होता है। वृक्षों में हरियाली सर्वत्र दृष्टिगोचर होती है और नाना प्रकार के फूल व हरी पत्तियां सारी पृथिवी पर सर्वत्र दिखाई देती हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि प्रकृति ने किसी विशेष अवसर पर किसी महानीय उद्देश्य से अपना श्रृंगार किया है। यह श्रृंगार वसन्त ऋतु व चैत्र के महीने से आरम्भ होने वाले नवसंवत्सर का स्वागत करने के लिए ही किया जा रहा प्रतीत होता है। टेसू के वृक्षों पर फूलों से लदी हुई डालियां शोभायमान होकर कहती हैं कि तुम भी हमारा अनुसरण कर अपने जीवन को विभिन्न सात्विक रंगों से रंग कर नवीन आभा से शोभायमान हो। इस वातावरण में मन उमंगों से भरा होता है। प्रकृति के इस स्वरूप को देखकर सात्विक मन वाला व्यक्ति कह उठता है कि हे ईश्वर तुम महान हो। नाना प्रकार के फलों, पत्तियों व वनस्पतियों से अलंकृत सारी सृष्टि को देखकर भी यदि मनुष्य इन सबके रचनाकार को अनुभव या प्रत्यक्ष नहीं करता तो एक प्रकार से उसका ऐसा होना जड़-बुद्धि होने का प्रमाण है। भिन्न-भिन्न रंगों के पुष्पों की छटा व सुगन्ध वातावरण में फैल कर सन्देश दे रही है कि तुम भी भिन्न-भिन्न रंगों व सुगन्ध अर्थात् विविध गुणों को जीवन में धारण करो, जो कि आकर्षक हो तथा जिससे जीवन पुष्पों की भांति प्रसन्न, खिला-खिला तथा दूसरों को भी आकर्षित व प्रेरणा देने वाला हो। यह प्रकृति के विभिन्न रंग ईश्वर में से ही तो प्रस्फुटित हो रहे हैं जिससे अनुमान होता है कि सात्विक व्यक्ति को भी निरा एकान्त सेवन वाला न होकर समाज के साथ मिल कर अपनी प्रसन्नता को सात्विक रंगों के द्वारा अभिव्यक्त करना चाहिये। ऐसे ही कुछ मनोभावों को होली के फाग वाले दिन लोग क्रियान्वित करते हुए दिखते हैं। होता यह है कि त्यौहार के दिन जिस व्यक्ति को जो व्यसन होता है, वह उसका सेवन कर स्वयं को प्रसन्न करता है। आजकल होली के अवसर पर मदिरापान का कृत्य कुछ इसी प्रकार का लगता है। मदिरापान जीवन को विवेकहीन बना कर पतन की ओर ले जाने वाला पेय है। इस प्रकार से होली मनाने का वैदिक संस्कृति से अनभिज्ञ लोगों का यह अप्रशस्त तरीका है।

हम देखते हैं कि होली पर पूर्णिमा वाले दिन देर रात्रि को होली का दहन करते हैं। बहुत सारी लकड़ियों को एक स्थान पर एकत्रित कर अवैदिक विधि से पूजा-अर्चना कर उसमें अग्नि प्रज्ज्वलित कर दी जाती है। कुछ समय तक वह लकड़ियां जलने के बाद बुझ जाती हैं। लोग यह समझते

हैं कि उन्होंने कोई बहुत बड़ा धार्मिक कृत्य कर लिया है जबकि ऐसा नहीं है। होली को इस रूप में जलाना किसी प्राचीन लुप्त प्रथा की ओर संकेत करता है। सृष्टि के आरम्भ से ही वेदों की प्रेरणा के अनुसार अग्निहोत्र-यज्ञ करने की प्रथा हमारे देश में रही है। आज भी यह यज्ञ आर्य समाज मन्दिरों व आर्यो के घरों में नियमित रूप से किये जाते हैं। पूर्णिमा व अमावस्या के दिन पक्षेष्टि यज्ञ करने का प्राचीन शास्त्रों में विधान है जिन्हें दर्श व पौर्णमास नामों से जाना जाता है। जो कार्य परिवार की इकाई के रूप में किया जाता है वह स्वाभाविक रूप से छोटा होता है तथा जो सामूहिक स्तर पर किया जायेगा वह वृहतस्वरूप वाला होगा जिससे उसका प्रभाव परिमाण के अनुरूप होगा। होली का दिन पूर्णिमा का दिन होता है। फाल्गुन के महीने में इस दिन किसानों के खेतों में गेहूं की फसल लहलहा रही होती है। गेहूं की बालियों में गेहूं के दाने पूरी तरह बन चुके हैं, अब उनको सूर्य की धूप चाहिये जिससे वह पक सकें। इन गेहूं की बालियों वा इनके भुने हुए दानों को होला कहते हैं। कुछ दिनों बाद ही वह फसल पक कर तैयार हो जायेगी और उसे काटकर किसान अपने घर के खलिहानों में संभालेगें। इस संग्रहित अन्न से पूरे वर्ष भर तक उनका परिवार व देशवासी उपभोग करेगें जिससे सबको बल, शक्ति, ऊर्जा, आयु, सुख, प्रसन्नता व आनन्द आदि की उपलब्धि होगी। गेहूं की बालियों अथवा होला को पूर्णिमा के यज्ञ में डालने से वह अग्नि देवता द्वारा संसार के समस्त प्राणियों व देवताओं को पहुंच जाती हैं और देवताओं का भाग उन्हें देने के बाद कृषक व अन्य लोग उसका उपयोग व उपभोग करने के लिए पात्र बन जाते हैं। होली का पौराणिक विधान उसी नव-अन्न-इष्टि यज्ञ की स्मृति को ताजा करता है। इसी कारण प्राचीन काल में इस पर्व को नवसस्येष्टि कहा जाता था। आज के दिन होना तो यह चाहिये कि होली का स्वरूप सुधारा जाये। होली रात्रि में न जलाकर दिन में 10-11 बजे के बीच गांव-मुहल्ला के सभी लोगों की उपस्थिति में एक स्थान पर वृहत्त यज्ञ के अनुष्ठान के रूप में आयोजित की जाये। कोई वैदिक विद्वान जो यज्ञ के विशेषज्ञ हों, उस यज्ञ को करायें। उसका महत्व उपस्थित जनता को विदित करायें और यज्ञ के अनन्तर सभी स्त्री-पुरुष मिलकर एक दूसरे को शुभकामनायें दें और अपनी ओर से मिष्ठान्न वितरित करें। वहां एक बड़ी दावत या लंगर भी होली या नव सस्येष्टि पर्व के उपलक्ष्य में किया जा सकता है। लोकाचार व प्रचलित व्यवस्था के अनुसार यदि चाहे तो प्राकृतिक रंग का तिलक-टीका चेहरे पर लगाकर शुभ कामनाओं का परस्पर आदान- प्रदान भी किया जा सकता है।

प्राचीन वर्ण व्यवस्था के अनुसार चार वर्णों ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र का एक-एक पर्व है जिनके नाम क्रमशः श्रावणी या रक्षा-बन्धन, दशहरा या विजया दशमी, दीपावली या शारदीय नवसस्येष्टि एवं होली या वासन्ती नवसस्येष्टि हैं। हमारे यहां प्राचीन काल से ही यज्ञों की परम्परा रही है। प्रत्येक पूर्णिमा व अमावस्या को पक्षेष्टि यज्ञ किये जाते थे तथा आर्य समाज की स्थापना से यह पुनः प्रचलित हो गये हैं। गेहूं नयी फसल के दानों से पूर्णिमा के वृहत्त यज्ञों में आहुतियां देने से होली नाम सार्थक होता है। ऐसा ही प्राचीन काल में होता रहा था जिसका बिगड़ा हुआ रूप वर्तमान का होली का पर्व है। यद्यपि यह पर्व कृषकों, श्रमिकों व वैश्य वर्ण का है तथापि इसको सभी वर्णों व समुदायों के द्वारा मिलकर मनाये जाने से समाज में एक अच्छी भावना का उदय होता है। समय के साथ-साथ कुछ लोगों के साधन बहुत बढ़ गये हैं। अधिक प्रजाजन मध्यम श्रेणी व साधनहीन हैं। धनी हर कार्य में, दिखावें की अपनी कृत्रिम मानसिक प्रकृति व रूतबे के लिए, प्रभूत धन व्यय करते हैं। अन्य मध्यम व निम्न वर्ग वाले इनका अन्धानुकरण करते हैं। इस सबने व मध्यकालीन अज्ञान व अन्धकार ने पर्वों की मूल भावना को विस्मृत करा दिया है। गेहूं के दानों से युक्त बालियां समस्त मनुष्य समाज के लिए आवश्यक, अपरिहार्य व महत्त्वपूर्ण हैं। हमारा देह व शरीर अन्नमय है। अन्य सभी प्राणियों के शरीर भी अन्नमय हैं। इनका प्रतीक यदि सभी अन्नों में मुख्य गेहूं या होला को मान लें तो कृषक व ईश्वर द्वारा उसका निर्माण व उत्पादन होने में तथा खेतों में फसल को लहलहाते देख कृषकों-श्रमिक-वैश्य बन्धुओं व प्रकारान्तर से सभी प्रजा-जनों को जो प्रसन्नता होती है, उसको अभिव्यक्त करने के लिए वृहत्त यज्ञ रचाने व सबके द्वारा उसे मिलकर करने, उसमें नवान्न गेहूं के दानों होलकों की यज्ञ-द्रव्य के रूप में आहुतियां देने जिससे ईश्वर की कृपा से वह अन्न सभी देशवासियों की सुख-समृद्धि का आधार बने, यह भावना निहित दिखाई देती है।

एक बार रंगों के बारे में पुनः विचार कर इसमें निहित सन्देश को जानने का प्रयास करते हैं। सभी रंग ईश्वर के बनाये हुए हैं। इसकी भी जीवन में कुछ उपयोगिता अवश्य होगी अन्यथा ईश्वर इन्हें बनाता ही क्यों? यदि विचार करें तो जीवन में शैशव काल के बाद बाल्यावस्था आती है जब माता-पिता बालक-बालिका को गुरुकुल भेजकर उसे शिक्षा व संस्कार देने का प्रयास करते हैं। बाल्यावस्था के बाद युवावस्था आरम्भ होती है, यह भी जीवन का एक भाग या रंग है जब मनुष्य में शक्ति व उत्साह हिलोरें लेता है। जीवन की इस अवस्था में मनुष्य उपलब्धियां प्राप्त करता है। महर्षि दयानन्द भी 18 वर्ष की आयु में अपना घर, परिवार, गली-मोहल्ला, माता-पिता, भाई-बन्धु व मित्र-सखाओं को छोड़ कर संसार की सच्चाई व रहस्य को जानने के लिए तथा सृष्टिकर्ता को जानकर उसे प्राप्त करने, जिसे हम सच्चे शिव की खोज कहते हैं, निकले थे। इसके अतिरिक्त उनके मन में मृत्यु का डर भी भरा हुआ था जिससे वह बचना चाहते थे। इस डर पर विजय पाने के उपाय ढूंढ़ना भी उनका उद्देश्य था जिसमें वह सफल हुए। मृत्यु पर विजय पाने का प्रमाण उनकी स्वयं की मृत्यु का दृश्य है। हम देखते हैं कि विपरीत परिस्थितियों में हुई उनकी मृत्यु व उससे पूर्व के शारीरिक कष्ट उन्हें किंचित विचलित नहीं कर पाये थे। युवावस्था से पूर्व तथा युवावस्था का कुछ समय विद्यार्जन में लग जाता है। इसके बाद विवाह होता है और फिर व्यवसाय का चयन, सन्तति वृद्धि व सन्तानों की शिक्षा-दीक्षा के दायित्व होते हैं। युवावस्था में व्यक्ति अच्छे या बुरे, अपने स्वभावानुसार, ज्ञान, सामर्थ्य, अन्तःप्रेरणा आदि से प्रभावित होकर कार्य करता है। युवावस्था के बाद परिपक्वता आती है जो युवावस्था का सांध्यकाल होता है और इसके कुछ समय बाद वृद्धावस्था आरम्भ होती है। जीवन की विभिन्न अवस्थाओं का अपना- अपना महत्व व उपयोगिता है और इसमें नाना प्रकार के रंग होते हैं। रंग अर्थात् जीवन की भिन्न-भिन्न अवस्थायें। अन्य अवस्थाओं को छोड़कर यदि युवावस्था पर दृष्टिपात करें तो पाते हैं कि वह आज के युवा सब आधुनिकता के रंग में रंगे हैं जिसमें बुद्धि का उपयोग नाममात्र है। हमें लगता है कि कुछ थोड़ी सी बातें अच्छी हो सकती हैं। आधुनिक जीवन शैली हमें विनाश की ओर अधिक ले जा रही है परन्तु हमारे युवाओं में सोचने व समझने की अधिक क्षमता नहीं है। आजकल का सामाजिक व वैश्विक वातावरण भी अनुकूल न होकर प्रतिकूल है। हमें यहां विवेक से अपना मार्ग तय करना होगा। आज की हमारी युवापीढ़ी जो आधुनिकता की चकाचौंध से सम्मोहित हो रही है उसने

- जारी पृष्ठ 7 पर

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसमाज करोल बाग के तत्त्वावधान में

अमर शहीद पं. लेखराम जी के 122वें बलिदान दिवस पर विचार गोष्ठी सम्पन्न

"भारत की अखण्डता राष्ट्रवाद में ही निहित है"

आर्यसमाज करोल बाग, नई दिल्ली के वार्षिकोत्सव एवं अमर बलिदानी पंडित लेखराम जी के 122वें बलिदान दिवस के अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोग से लेखराम स्मृति व्याख्यान का आयोजन 10 मार्च, 2019 को आर्य समाज करोलबाग के सभागार में सम्पन्न हुआ। जिसका विषय था - "भारत की अंखडता राष्ट्रवाद में ही निहित है।" कार्यक्रम का आरम्भ करते हुए श्री कीर्ति शर्मा ने कहा कि 19वीं शताब्दी में राष्ट्रवाद की भावना जन-जन में जागृत करने का सर्वाधिक श्रेय महर्षि दयानन्द को जाता है। उन्हीं से प्रेरणा पाकर 1857 का स्वतंत्रता संग्राम लड़ा गया। उन्हीं के विचारों से प्रभावित होकर लाला लाजपत राय, श्यामजीकृष्ण वर्मा, रामप्रसाद बिस्मिल, भगत सिंह, स्वामी श्रद्धानन्द, भाई परमानन्द, वीर सावरकर और अनेक स्वतंत्रता सैनानियों ने आजादी के लिए बलिदान दिया।

मुख्य वक्ता प्रसिद्ध पत्रकार, लेखक, कश्मीर विषयों के विशेषज्ञ श्री सुशील पंडित ने प्रचालित अवधारणा कि भारत कभी राष्ट्र नहीं रहा, यह केवल पिछली शताब्दी में ही राष्ट्र इकाई के रूप में स्थापित हुआ, का ऐतिहासिक तथ्यों द्वारा बहुत तार्किक विचारों द्वारा खंडित किया। उन्होंने प्रमाणित कि भारत राष्ट्र के रूप में कम से कम 5000 वर्षों से तो स्थापित है ही। राष्ट्रवाद यानि नि:स्वार्थ राष्ट्र सर्मपण द्वारा ही भारत की अखण्डता को सुरक्षित रखा जा सकता है।

आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी ने राष्ट्र को शरीर के रूप से समझाते हुए कहा कि जब तक शरीर के सब अवयव संयुक्त एवं संयोजित ढंग से सोचते व कार्य नहीं करते तब तक शरीर पुष्ट व स्वस्थ नहीं रह सकता। इसी प्रकार राष्ट्र के सभी अंगो को भी संतुलित और राष्ट्र सुरक्षा के ध्येय के लिए सामूहिक समर्पण द्वारा ही भारत की अखंडता को सुरक्षित रखा जा सकता है। निर्भयता जीवन और राष्ट्र की सुरक्षा का मूल तत्व है। इसलिए संस्कारों के द्वारा इसे अपनी संतति में प्रतिष्ठित करना चाहिए।

आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी ने पंडित लेखराम जी के जीवन पर बहुत प्रभावी वक्तव्य दिया तथा उपस्थित जनसमूह ने बलिदानी लेखराम जी को भावभीनी श्रद्धांजलि भेंट की।

अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए मेजर डॉ. रविकांत जी ने सभी आयोजकों और उपस्थित बहनों एवं बन्धुओं को धन्यवाद दिया तथा आह्वान किया कि आर्यसमाज का प्रत्येक कार्यकर्ता भारत की अखंडता के लिए त्याग और बलिदान देने को तत्पर रहे।

गोष्ठी को सम्बोधित करते आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी, श्री सुनील पण्डित जी, श्री कीर्ति शर्मा जी एवं आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी तथा उपस्थित आर्यजन

पश्चिम दिल्ली वेद प्रचार मंडल के तत्त्वावधान में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जन्मोत्सव एवम बोधोत्सव सम्पन्न

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जन्मोत्सव एवम बोधोत्सव 3 मार्च, 2019 को प्रात: 10 से 2 बजे तक डॉ. हेडगेवार सामुदायिक भवन मोती नगर में मनाया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ आचार्य हरिदेव जी के ब्रह्मत्व में 11 कुण्डिय यज्ञ से प्रारम्भ हुआ।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी, महामंत्री श्री विनय आर्य जी ने महर्षि दयानन्द के जीवन पर प्रकाश डाला। उत्तरी दिल्ली नगर निगम के महापौर श्री आदेश गुप्ता जी ने महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा बताए हुए मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। तिहाड़ गुरुकुल के अर्यवीरों, आर्य समाज सी ब्लॉक जनकपुरी की वीरांगनाओं, दयानंद आदर्श विद्यालय के बच्चों द्वारा कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। आचार्य देव जी ने ऋषि जीवन पर मनमोहक भजन प्रस्तुत किए। वैदिक विद्वान डॉ महेश विद्यालंकार जी ने भी अपने विचार रखे।

क्षेत्र के अन्य नेता सर्वश्री विपिन मल्होत्रा, भारत भूषण मदान, राजेश भाटिया, श्री सुभाष सचदेवा, हरीश खुराना जी भी इस कार्यक्रम में सम्मिलित हुए।

आर्य नेता और कर्मठ कार्यकर्ता सर्वश्री विक्रम नरूला, सतीश चड्ढा, रवि चड्ढा, सुखबीर आर्य, नीरज आर्य, धर्मवीर, मदन मोहन सलूजा, धर्मेन्द्र धवन, मुकेश आर्य, दिनेश आर्य, सुरेन्द्र कोछड़, राकेश आर्य जी ने अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम को सुशोभित किया। कार्यक्रम के आयोजन में आर्यसमाज मोती नगर के अधिकारियों को पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ। मंडल के प्रधान श्री बलदेव सचदेवा जी ने सभी अर्यजनो का धन्यवाद किया।

-वीरेन्द्र सरदाना, महामंत्री

आर्य समाज ने दिहाड़ी महिला श्रमिकों को साड़ियां बाटी : महिलाएं बने स्वावलंबी एवं सशक्त - अर्जुन देव चड्ढा

आर्य समाज कोटा द्वारा अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस 8 मार्च के अवसर पर दिहाड़ी श्रमिक महिलाओं को केशवपुरा स्थित दिहाडी श्रमिक स्थल पर साड़ियां बांटी तथा महिला सशक्तिकरण एवं महिला अधिकारों की जानकारी दी।

इस अवसर पर राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व उप प्रधान अर्जुन देव चढ़ड्ढा ने श्रमिक महिलाओं से कहा कि वैदिक संस्कृति में महिलाओं को सर्वोच्च स्थान दिया गया है। महिलाएं स्वावलंबी एवं सशक्त बनें जिससे समाज का समग्र विकास हो सके। चढ्डा ने कहा कि आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने महिलाओं को समानता का अधिकार दिलाया।

साड़ियां वितरण के इस अवसर पर डीएवी स्कूल कोटा की प्राचार्य श्रीमती सरिता रंजन गौतम ने महिलाओं को संबोधित करते हुए कहा कि वे जीवन में शिक्षा के महत्व को समझें और अपने परिवार को शिक्षित बनाने के लिए कार्य करें साथ ही स्वयं भी शिक्षित एवं साक्षर बनने के लिए कुछ कार्य अवश्य करें। शिक्षा से महिलाएं अपने अधिकारों का सही ढंग से उपयोग कर सकती हैं।

इस अवसर पर समाजसेवी आर्य पुत्र डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता ने महिलाओं को गुटका तंबाकू आदि का नशा नहीं करने को कहा तथा नशे से होने वाली कैंसर जैसी घातक बीमारी के बारे में जानकारी प्रदान की। आर्य समाज के इस कार्यक्रम के अवसर पर आर्य समाज गायत्री बिहार के प्रधान अरविन्द पांडे ने श्रमिक महिलाओं को बिना औषधि स्वस्थ रहने के लिए योग एवं प्राणायाम के बारे में बतलाया। उन्होंने कहा कि प्राणायाम द्वारा विभिन्न प्रकार की बीमारियों से बचा जा सकता है।

इस अवसर पर आर्य समाज के वैदिक विद्वान डीएवी के धर्म शिक्षक शोभाराम आर्य ने वैदिक संस्कृति में महिलाओं के स्थान की चर्चा करते हुए कहा कि प्राचीन काल में महिलाओं को पुरुषों के समान ही समानता के अवसर थे इतिहास में गार्गी, मैत्रेयी जैसी विदुषी महिलाओं का नाम मिलता है। इस अवसर पर आर्य समाज तलवंडी के पूर्व मंत्री लालचंद आर्य तथा किशन सिंह आर्य (हरियाणा) भी उपस्थित रहे। - *संयोजक*

Veda Prarthana - II
Rigveda - 30

विजानीहि आर्यान् ये च दस्यवो बर्हिष्मते रन्ध्या शासदवूतन्।।
शाकी भव यजमानस्य चोदिता विश्वेत्ता ते सधमादेषु चाकन।।
ऋग्वेद - 1/4/10/8

Vijanihi aryan ye cha dasyavo bahirshmate randhya shasadavratan.
Shaki bhava yajamanasya chodita vishvetta te sadhamadeshu chakana.
Rigveda 1/4/10/8

Nations' Rulers should Promote Noble Persons and Punish Its Enemies

- Acharya Gyaneshwarya

This mantra instructs the rulers and administrative authorities the methods by which they can successfully govern the nation. The first measure is that the nation's president, prime minister, other ministers, members of assembly, leaders, security forces, other administrative authorities should find out through various measures which persons are *aryas* i.e. who are noble and have virtuous character and who are *anaryas* i.e. whose qualities are opposite of *aryas* and who are not noble and not virtuous. In God's eyes these are the two main divisions among human beings *arya* and *anarya.*

The foremost attributes of an *arya* is a deep abiding belief and faith in true God with a correct understanding of God' various attributes. They are as follows: God is Omnipresent like space, He has no shape or form like air, God enlightens our souls just like the sun lightens the earth, God is the Creator and Maintainer of the universe as well as causes its dissolution. God knows all our karmas/deeds and as Karmphal data gives us appropriate rewards, none of our deeds are hidden from Him. A true arya at least two times every day sits down in a quiet peaceful place and does *Eeshwar-stuti-prarthana-upasana* i.e. prays and meditates to God. An arya is an honest person and due to personal vanity, selfishness or for an unjust reason does not punish, insult or hurt others. He/she speaks with a sweet voice instead of harsh words, avoids violence, and in his/her mind does not covet, even let a desire arise to acquire things which belong to others.

An arya is a person who keeps his/her verbal promises to others, and then makes his/her utmost effort to meet the responsibilities including any hardships that come along the way. He/she does not go back on his/her words and deceive others. An arya before undertaking a task thinks of the possible good and harmful effects and only performs beneficial deeds. An arya has control over his/her mind and various senses, he/she is not selfish, greedy or lustful and tries to fulfill others needs before trying to meet his/her personal needs. An arya is a generous person who does selfless deeds for the welfare of others with his/her own personal time, body, mind and money and inspires others to do the same. An arya is a patriot, virtuous, thoughtful, farsighted person who is simple in life style and lacks vanity.

A person whose values are opposite to that of an arya is called an anarya. An Anarya is either an atheist, or one who believes in a God with wrong attributes, i.e. attributes which God does not possess, and are against the teachings of Vedas. An anarya is self-centered and to fulfill his/her selfish desires does not hesitate to create wealth by acquiring others valuable things by lying, deception, or fraud. They are willing to hurt others in a variety of ways including blaming or insulting others, as well as physically injuring them. Anaryas, to establish their vane superiority promote among people unnecessary disputes, enmity, fights, and violence. To make profit they adulterate foods and to fill their taste needs have no hesitancy killing innocent and helpless animals and birds.

Anaryas consider other persons who belong to different faiths, sects or races with disdain, hate or even worthy of being killed instead of having a true dialogue and/or understanding with them. Many anaryas have multiple wives and multiple children even though they can ill afford them and want the government and others to meet the children's food and other daily needs. Many of them have blind faith in beliefs, which are false, unscientific and against the rules of nature. Anaryas for the sake of their wealth and pseudo respect are willing to give up all types of moral values. Anaryas who have senior governmental positions, are often willing to shortchange societal or national safety, administrative rules and laws even though they took an oath to uphold them, e.g. major bribing scandals in various countries. Other types of anaryas create their wealth and riches through exploiting vice by promoting and selling depraved movies, music, songs, magazines, CD's, DVD's etc.

Lastly, there are anaryas who are subtle in their actions because they support, promote, and advocate activities that are clearly harmful in the long run for the society, nation and the world. Examples of these types of activities are promoting sales and trade of pesticides for enhancing crop production; promoting use of tobacco, alcohol, other addicting agents such as marijuana; increasing energy production by newer environmentally destructive methods to extract fossil fuels like coal and gasoline and the burning of which further pollute the air we breathe and the water we drink. These things gradually poison various types of foods, grains, vegetables, fruits, and herbs we eat and make us weaker and sicker. Also, their bad effects are both short term and long lasting for generations to come.

The Vedas state that societies and nations should encourage people to become aryas i.e. persons with noble attributes, help their progress, honor them, and when appropriate give them various types of awards. On the other hand persons who are anaryas because of their bad or vicious deeds should be punished sufficiently without delay, because they are enemies of the society and nation. Also, persons who directly or indirectly assist and support anaryas to succeed should be punished. The anaryas should be sent to jails to perform hard labor, and all their wealth and creature comforts obtained by wrong or criminal methods should be confiscated.

Supreme father please give us wisdom, strength, ability, and inspiration so that we become aryas with noble virtuous values. May we unite with likeminded persons and make plans as well as execute those plans to stop those persons who due to their vanity, greed and other exploitative reasons are destructive to basic human values of the society and nation. Dear God with Your grace may we succeed in our goals and make earth a 'heavenly' place to live full of peace and harmony.

To Be Continue....

आर्य सन्देश पत्र के स्वामित्व आदि सम्बन्धी विवरण
फार्म 4 नियम 8
(प्रेस एण्ड रजिस्ट्रेशन ऑफ बुक एक्ट)

प्रकाशक का नाम	:	दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001
प्रकाशक की अवधि	:	साप्ताहिक
प्रकाशक का समय	:	प्रति बृहस्पतिवार एवं शुक्रवार
प्रकाशक का नाम	:	धर्मपाल आर्य
क्या भारत का नागरिक है	:	हाँ
मुद्रक का पता	:	दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15- हनुमान रोड,नई दिल्ली- 110001
क्या भारत का नागरिक है	:	हाँ
प्रकाशक का पता	:	पूर्ववत्
सम्पादक का नाम	:	धर्मपाल आर्य
क्या भारत का नागरिक है	:	हाँ
सम्पादक का पता	:	पूर्ववत्
उन व्यक्तियों के नाम पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा समस्त पूंजी के 1% से अधिक के साझेदार/हिस्सेदार हों	:	दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली -110001

मैं धर्मपाल आर्य इस लेख पत्र के द्वारा घोषणा करता हूं कि उपर्युक्त विवरण जहां तक मेरा ज्ञान और विश्वास है, सही है।

- धर्मपाल आर्य, प्रकाशक एवं मुद्रक

प्रेरक प्रसंग

वे दिलजने आर्यवीर

प्रसिद्ध काकोरी केस के अभियुक्त प्रणवीर पण्डित श्री रामप्रसाद 'बिस्मिल' के सम्बन्ध में तो बहुत भाई जानते हैं कि वे एक दृढ़ आर्यसमाजी थे, परन्तु उनके सहयोगी ठाकुर रोशनसिंह जी के बारे में आर्यसमाज के सब लोगों को आज भी यह ज्ञात नहीं कि वे भी एक सिद्धान्तनिष्ठ, ईश्वरभक्त आर्यपुरुष थे। वे काल-कोठरी में ही थे तो, उनके पूज्य पिताजी चल बसे। यह समाचार सुनकर उनके नयनों से एक अश्रु भी न गिरा। केवल इतना ही कहा 'तत् सत्, तत् सत्, तत् सत्'।

फाँसी-दण्ड सुनकर भी उन्होंने संध्योपासना व व्यायाम के नियम को पूर्ववत् निभाया। फाँसी पाने से कुछ समय पूर्व भी संध्या व स्नान करके उन्हें दण्ड पेलते देखकर जेल अधिकारी दंग रह गया।

फाँसी पाने से लगभग एक सप्ताह पूर्व अपने मित्र को लिखे पत्र में आपने ये मार्मिक बातें लिखीं, 'संसार में जन्म लेकर मरना तो अवश्य है। संसार में कुकर्म करके मनुष्य अपने आपको अपकीर्ति का भागी न बनाये और मरते समय ईश्वर का ध्यान रखे। ये दो बातें होनी चाहिएँ। ईश्वर की कृपा से ये दोनों बातें मेरे साथ हैं। इसलिए मेरी मृत्यु किसी प्रकार भी शोकजनक नहीं है। दो वर्ष से बाल-बच्चों से पृथक् हूँ। इस अवधि में ईश्वर की उपासना का बहुत अच्छा अवसर मिला।'

यह ऐतिहासिक पत्र तो आजकल की पुस्तकों में मिलता नहीं।

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु
साभार :
तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

पृष्ठ 4 का शेष

होली का पर्व और वैदिक ..

वेद, वैदिक साहित्य, महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन चरित और उनके सत्यार्थ प्रकाश आदि ग्रन्थ नहीं पढ़े हैं। यदि पढ़े होते तो फिर वह बुद्धि व ज्ञान की आंखें बन्द करके आधुनिकता को न अपनाते और अपना भला-बुरा समझ पाते। अत: होली का पर्व मनाते हुए हमें आत्म-चिन्तन कर अच्छे-बुरे में भेद कर भद्र या अच्छे को अपनाना होगा और अन्य अविवेकी लोगों की भांति आधुनिकता में न बह कर सत्य, वैदिक ज्ञान व विवेक के मार्ग पर चलना होगा अन्यथा आधुनिक जीवन शैली भविष्य में हमारे लिए पश्चाताप का कारण होगी। अत: युवापीढ़ी को अपनी बुद्धि को सत्य व असत्य तथा अच्छे व बुरे का निर्णय करने में समर्थ बनना चाहिये और असत्य को त्याग कर सत्य को ग्रहण करना चाहिये, यही होली पर विचार व चिन्तन करने का एक विषय हो सकता है।

हमारे धर्म व संस्कृति का आधार वेद एवं वैदिक साहित्य है। वेद ईश्वर प्रदत्त ज्ञान है। ईश्वर इस सृष्टि का रचयिता व समस्त प्राणि जगत का उत्पत्तिकर्ता है। वह बड़े से बड़े वैज्ञानिक से अधिक ज्ञानवान, बड़े से बड़े मनुष्य आदि प्राणी से कहीं अधिक बलवान ही नहीं अपितु सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक, सत्य-चित्त -आनन्द स्वरूप, निराकार व सृष्टि का धारण व पोषण-कर्ता है। इसने हमें मनुष्य का जन्म किसी विशेष उद्देश्य व लक्ष्य की पूर्ति के लिये दिया है। हमें उसे जानना है। वह लक्ष्य धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष है। दु:खों से निवृत्ति व आनन्द की प्राप्ति का मार्ग वैदिक ग्रन्थों का अध्ययन-स्वाध्याय, याज्ञिक कार्य व वैदिक जीवन है। धर्म अर्थात् कर्तव्य व वेद विहित कर्म यथा सन्ध्योपासना, अग्निहोत्र, पितृयज्ञ अतिथि-यज्ञ व बलिवैश्वदेव-यज्ञ आदि कर्म हैं। इनका पालन व आचरण ही धर्म है। मनुष्य को अपनी शारीरिक, बौद्धिक, मानसिक व आत्मिक उन्नति करनी है जो वेदाध्ययन पर जाकर पूरी होती है। इन्हें जानना व इनका पालन करना धर्म होता है। इनको करते हुए धर्म से अर्थ का उपार्जन करना व धर्म व अर्थ से जो सुख की सामग्री प्राप्त हो, उसका वैदिक-मर्यादाओं के अनुसार उपभोग करना, 'काम' है। इनको करते हुए उपासना- योग से ईश्वर का साक्षात्कार होने पर मोक्ष की प्राप्ति होती है। यहां पहुंच कर जीवन का उद्देश्य पूरा हो जाता है। जीवन का लक्ष्य मोक्ष समीप होता है। यदि इस मार्ग का अनुसरण नहीं करेगें तो हमारा यह जन्म व परजन्म दोनों दु:खों से पूर्ण व असफल होगें। हमने देखा है कि कोई भी समझदार व्यक्ति किसी अशिक्षित का अनुकरण व अनुसरण कभी नहीं करता, यदि करता है तो वह मूर्ख होता है। परन्तु यहां हम देखते हैं कि जीवनयापन के क्षेत्र में हम मूर्खों का प्राय: अनुकरण करते हैं व कर रहे हैं। हमें जिन लोगों को शिक्षित करना था हमने उनके मूर्खतापूर्ण कार्यों का अपनी कामनाओं की पिपासा को भोग द्वारा शान्त करने के लिए अनुसरण किया। यह हमारी भारी भूल है जिसका सुधार हमें करना होगा अन्यथा इसका असुखद परिणाम कालान्तर में हमारे सामने आयेगा। अत: सत्यासत्य के विवेक में देरी करना हानिकारक है। यहां इतना अवश्य कहना है कि वेद व वैदिक साहित्य में वर्तमान मे मनाई जाने वाली होली का कहीं उल्लेख नहीं मिलता। महर्षि दयानन्द ने भी अपने विस्तृत साहित्य में इस प्रकार की होली का उल्लेख या विधान नहीं किया है, केवल नवसस्येष्टि का ही उल्लेख उन्होंने किया है। पुराणों में भी इस प्रकार की होली का विधान होने का अनुमान नहीं है। पुराणों में एक राजा हिरण्यकशपु, उसकी बहिन होलिका व पुत्र प्रहलाद् की कथा आती है जिसका उद्देश्य ईश्वर की उपासना व भक्ति का सन्देश देना है जिससे लोग ईश्वर भक्ति में प्रवृत्त हों। इस कथा का वर्तमान की होली से कोई सीधा व लाभकारी सम्बन्ध नहीं है।

होली के दिन फाल्गुन मास समाप्त होता है तथा चैत्र मास के कृष्ण पक्ष का आरम्भ होता है। चैत्र मास के शुक्ल पक्ष से नया वैदिक संवत्सर आरम्भ होता है। हमें लगता है कि होली का पर्व पुराने वर्ष को पूर्णिमा के दिन वृहत अग्निहोत्र-यज्ञ से विदाई देकर चैत्र कृष्ण प्रतिपदा के दिन एक प्रकार से नये वर्ष के स्वागत का पर्व भी है। पौराणिक परम्परा के अनुसार स्वागत के लिए पुष्पों व पुष्प-मालाओं का प्रयोग करते हैं। इस प्रकार पुष्प भेंट कर यह दिखाया जाता है कि फूलों की तरह नाना रंगों से विभूषित व सुन्दर तथा उनकी सुगन्धि की महक से स्वयं को सुवासित कर रहे हैं। प्रकृति इस दिन पहले से ही नाना रगों के फूलों से सज-धज कर चैत्र मास के स्वागत के लिए तैयार होती है। वायुमण्डल व मौसम भी अपनी शीतलता को कम कर देता है। इस दिन, यदि वर्षा आदि न हो, तो बहुत सुहावना व अनुकूल मौसम होता है। लगता है कि प्रकृति अपने रंग-बिरंगे फूलों व उनकी सुगन्ध से नये वर्ष के प्रथम महीने चैत्र का स्वागत कर रही है। हम यज्ञ से वातावरण में सुगन्ध उत्पन्न करते हैं तो प्रकृति भी पुष्पों की सुगन्ध से वातावरण को सुवासित करती है। यह प्रकृति का स्वयं का सृष्टि-यज्ञ है। इसी का प्रतीक हमारा यज्ञ भी होता है। हमारा जीवन उत्साह, उमंग, जोश, विवेक, ज्ञान, उपासना, अग्निहोत्र यज्ञ, आत्म-कल्याण की भावना, वेदों के प्रचार की कामना व भावना, सत्य के प्रति आग्रह का स्वभाव आदि से भरा होनी चाहिये।

– ***मनमोहन कुमार आर्य***

196 चुक्खूवाला-2, देहरादून

पुरोहित/धर्माचार्य चाहिए

विदेशों में प्रचार हेतु ऐसे सुयोग्य पुरोहित/धर्माचार्यों की आवश्यकता है जो हिन्दी, अंग्रेजी एवं संस्कृत पर समान अधिकार रखतें हों और समस्त संस्कार वैदिक रीति के अनुसार कराने में निपुणता रखते हों। गुरुकुल से आर्ष पाठविधि से शिक्षा प्राप्त अनुभवी महानुभावों को वरीयता। इच्छुक अभ्यर्थी अपना विस्तृत बायोडाटा, पासपोर्ट एवं शैक्षणिक योग्यता की प्रतियों के साथ aryasabha@yahoo.com पर ईमेल करें। – ***महामन्त्री***

आर्यसमाज ए.जी.सी.आर. एन्कलेव का वार्षिकोत्सव एवं 195वां महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव

आर्यसमाज ए.जी.सी.आर. एन्कलेव, दिल्ली-92 का वार्षिकोत्सव समारोह एवं 195वां महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव समारोह द्वारा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोग से 16-17 मार्च, 2019 को समुदाय भवन सैन्ट्रल पार्क, ए.जी.सी.आर. एन्कलेव में प्रात: 8 बजे से आयोजित किया जाएगा। इस अवसर पर आचार्या पुष्पा शास्त्री जी के भजन एवं प्रवचन होंगे। रात्रि 7 से 8:30 बजे विशेष प्रवचन श्री विनय आर्य जी द्वारा होंगे।

– ***आर्य डॉ. ओमप्रकाश भटनागर, मन्त्री***

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ में नि:शुल्क योग, आसन शिविर एवं ऋग्वेद यज्ञ

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ हरियाणा में स्वामी धर्ममुनि जी महाराज के सान्ध्य में नि:शुल्क योग एवं आसन व्यायाम प्राणायाम स्वास्थ्य सुधार शिविर एवं ऋग्वेद बृहद् यज्ञ का आयोजन 25 से 21 मार्च तक आयोजित किया जा रहा है। योग प्रशिक्षक एवं यज्ञ ब्रह्मा स्वामी विदेह योगी होंगे। प्रवचन स्वामी रामानन्द जी सरस्वती, आचार्य चांद सिंह आर्य, स्वामी सच्चिदानन्द जी एवं भजनोपदेश पं. राजचन्द्र जी वैदिक, लक्ष्मण प्रसाद एवं श्री रामानन्द जी के होंगे। – ***संयोजक***

महात्मा चैतन्यस्वामी जी सम्मानित

4 मार्च, 2019 को महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के बोधोत्सव के अवसर पर आर्यजगत् की विभूति, चिन्तक, लेखक एवं प्रबुद्ध वक्ता आर्यश्रेष्ठी महात्मा चैतन्यस्वामीजी को उनके द्वारा वैदिक धर्म एवं सामाजिक क्षेत्र में किए गए अनेक महत्त्वपूर्ण कार्यों के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वतीजी की पुण्य जन्मभूमि टंकारा में 'स्वामी संकल्पानन्द स्मृति सम्मान' से सम्मानित किया गया। स्वामीजी गुरू विरजानन्द गुरूकुल करतारपुर(जालन्धर,पंजाब) के संरक्षक हैं तथा आनन्दधाम आश्रम उधमपुर(जम्मू काश्मीर) के मुख्य संरक्षक एवं निदेशक तथा उत्कर्ष कलाकेन्द्र के संस्थापक अध्यक्ष भी हैं।

उन्हें यह सम्मान आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई की ओर से टंकारा ट्रस्ट द्वारा आयोजित भव्य कार्यक्रम में दिया गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य, डी.ए.वी. प्रबन्धकृत समिति के उपप्रधान डॉ. रमेश आर्य, पतजंलि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ.महावीर अग्रवाल, आचार्य इन्द्रदेव, श्रीयोगेश मुजांल, श्री सुधीर मुंजाल, श्री लधाभाई पटेल, स्वामी शान्तानन्द, टंकारा को भव्य एवं दर्शनीय रूप देने वाले श्री अजय सहगल एवं श्रीहसंमुख परमार आदि अनेक गण्यमाण्य व्यक्ति उपस्थित थे।

प्रथम पृष्ठ का शेष

17वां आर्य परिवार होली मंगल....

सर्वप्रथम तो बाजार के रंग से होली न ही खेली जाये तो अच्छा है लेकिन यदि किसी कारणवश खेलना भी पड़े तो खेलने से पहले अपने शरीर पर नारियल अथवा सरसों के तेल से अच्छी प्रकार लगा लेना चाहिए ताकि तेलयुक्त त्वचा पर रंग का दुष्प्रभाव न पड़े और साबुन लगाने मात्र से ही शरीर पर से रंग छुट जाये। रंग आंखों में या मुँह में न जाये इसकी विशेष सावधानी रखनी चाहिए। इससे आँखों तथा फेफड़ों को नुकसान हो सकता है।

जो लोग कीचड़ व पशुओं के मलमूत्र से होली खेलते हैं वे स्वयं तो अपवित्र बनते ही हैं दूसरों को भी अपवित्र करने का पाप करते है। अत: ऐसे दुष्ट कार्य करने वालों से दूर ही रहें तो अच्छा होगा क्योंकि यह मानवीय प्रवृत्ति नहीं है।

वर्तमान समय में होली के दिन शराब अथवा भांग पीने की कुप्रथा ने जन्म ले लिया है। नशे से चूर व्यक्ति विवेकहीन होकर घटिया से घटिया कृत्य कर बैठते हैं। अत: नशीले पदार्थ से तथा नशा करने वाले व्यक्तियों से सावधान रहना चाहिये। आजकल सर्वत्र उन्मुक्तता का दौर चल पड़ा है। पाश्चात्य जगत के अंधानुकरण में भारतीय समाज अपने भले-बुरे का विवेक भी खोता चला जा रहा है। परन्तु जो लोग संस्कृति का आदर करने वाले हैं, ईश्वर व अपने संस्कारों में श्रद्धा रखते हैं ऐसे लोगो में शिष्टता व संयम विशेष रूप से होना चाहिये हो सके तो अपने परिवार और सगे-सम्बन्धियों के बीच ही होली मनायें तो अच्छा है ताकि दुष्ट प्रवृत्ति के लोगों कि कुदृष्टि से बच सकें।

होली मात्र लकड़ी के ढ़ेर जलाने का त्योहार नही है। यह तो चित्त की दुर्बलताओं को दूर करने का, मन की मलिन वासनाओं को जलाने का पवित्र दिन है। अपने दुर्गुणों, व्यस्नों व बुराइयों को जलाने का पर्व है होली।

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 14-15 मार्च, 2019
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 13 मार्च, 2019

संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) द्वारा आयोजित सिविल सर्विसेज IAS परीक्षा - 2019 एवं 2020

भाग लेने के इच्छुक विद्यार्थी ध्यान दें

आर्यसमाज के शिक्षण संस्थानों/गुरुकुलों/सेवाकेन्द्रों/बालवाड़ियों, डी.ए.वी. संस्थानों/ विद्यालयों से शिक्षा प्राप्त ऐसे प्रतिभावान छात्र/छात्राएं जो वर्ष 2019 में आयोजित होने वाली सिविल सर्विसिज एग्जामिनेशन में भाग लेना चाहते हैं, अर्थिक एवं मूलभूत आवश्यकताओं के अभाव के कारणों से परीक्षा तैयारियां नहीं कर पा रहे हैं उन सबके लिए आर्यसमाज की ओर से स्वर्णिम अवसर।

महाशय धर्मपाल आर्य प्रतिभा विकास संस्थान की ओर से राष्ट्रवादी विचारधारा वाले, आर्य शिक्षण संस्थानों में शिक्षा प्राप्त सुयोग्य पात्रों को आर्थिक सहयोग एवं परीक्षा तैयारियों के लिए प्रशिक्षण की सुविधा प्रदान करने की घोषणा की जाती है। योजना का लाभ प्राप्त करने के इच्छुक महानुभावों को एक लिखित/मौखिक एवं बौद्धिक परीक्षा पास करनी होगी। सफल परीक्षार्थियों में से प्रथम 40 अभ्यर्थियों को दिल्ली में आमन्त्रित करके, भोजन, आवास एवं तत्सम्बन्धी समस्त सुविधाएं निशुल्क प्रदान की जाएंगी तथा प्रशिक्षण की तैयारियां कराई जाएंगी। इस योजना का लाभ उठाने के इच्छुक विद्यार्थी/परीक्षार्थी अपने शैक्षिक प्रमाण पत्रों, वित्तीय स्थिति के विवरण तथा आवश्यक कागजातों की प्रति के साथ अपना आवेदन पत्र संस्थान की ईमेल आई.डी. dss.pratibha@gmail. com पर ईमेल करें। अधिक जानकारी के लिए मो. 9540002856 पर सम्पर्क करें। परीक्षा की तिथि शीघ्र ही घोषित की जाएगी। - ***व्यवस्थापक***

प्रतिष्ठा में,

1,49,00,000+
लोगों ने अब तक देखा
आर्यसमाज YouTube चैनल

आप भी देखें और सब्सक्राइब अवश्य करें और अपने मित्रों, सम्बन्धियों को देखने की प्रेरणा करें।
यदि आप लगातार नई वीडियो देखना/सूचना प्राप्त करना चाहते हैं तो घंटी बटन दबाकर सब्सक्राइब करें।
यदि आप भी अपने आर्यसमाज के आयोजनों - भजन, प्रवचन, सन्देशात्मक कार्यक्रम, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों को इस चैनल पर अपलोड कराने के लिए upload@thearyasamaj.org पर भेजें। - महामन्त्री

MUTUAL FUNDS/SIP, INSURANCE, MEDICLAIM, BONDS, PSM, NPS, F.D., TAX SAVING,
आदि के लिए सम्पर्क करें -
धर्मवीर आर्य, 9810216281
विज्ञापन

दिल्ली सभा द्वारा प्रकाशित
महर्षि दयानन्दकृत
सत्यार्थ प्रकाश
उर्दू भाषा में अनुवाद)

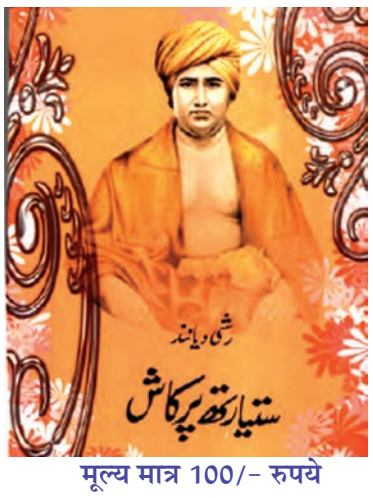

मूल्य मात्र 100/- रुपये
श्री बलदेव राज महाजन जी
(आर्यसमाज आर्यनगर, पटपड़गंज)
के विशेष सहयोग से
केवल मात्र 70/- में
प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें -
दिल्ली आर्य प्र. सभा, मो. 9540040339

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल या दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है।
- सम्पादक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह